नाटक– गुड़िया घर
लेखक– हेनरिक इब्सन

नोरा : लेकिन उसे कुछ भी पता नहीं चलता। हे भगवान, तुम इस बात को समझ क्यों नही सकती हो? उसे तो यह नहीं पता होना था कि उसकी हालत कितनी ख़स्ता थी। डॉक्टरों ने तो मुझे आकर बताया था कि उसकी जान ख़तरे में थी और जब तक वह दक्कन नहीं जाता तो बच नहीं सकता था। तुझे नहीं लगता कि मैंने पहले उसे मनाने की कोशिश की? मैंने उसे कहा कि मुझे दूसरी दुलहनों की तरह बाहर जाने का शौक था। मैं रोई, मैं गिड़गिड़ाई, मैंने कहा है कि उसे मेरी हालत के बारे में सोचना चाहिए, और अगर उसे मेरी फ़िक्र हो तो मेरी बात मान लेनी चाहिए। फिर मैंने यह भी कह दिया कि वह कर्ज़ भी ले सकता था। पर उसे तो गुस्सा आ गया, क्रिस्तीने। उसने कहा कि मैं ग़ैर ज़िम्मेदार थी और एक पति होने के नाते उसका फ़र्ज़ था कि वह मेरी हर आदत और वहम। (मेरे ख्याल में उसने यहीं शब्द इस्तेमाल किये थे।) का पालन न करे। चलो, मैंने सोचा, तुम्हें बचाना तो है ही, और तब मैंने–

(कुछ सोचकर, आधी मुस्क़ान के साथ)– हाँ, शायद कभी; कई साल बाद जब मैं अब जैसे खूबसूरत नहीं रही। हस मत! मेरा मतलब है जब थूरवाल्द मेरा इस क़दर दीवाना नहीं होगा जितना अब है। जब उसके लिए मेरा नाचना गाना, शेर ओ शायरी और पहनना ओढ़ना इतना मायने नहीं रखेगा। तब अपने पास कोई दूसरा हथियार होना चाहिए। (रुकती है) बिलकुल बकवास है ना! ऐसा वक़्त कभी नहीं आएगा–अच्छा, बोल तुझे मेरा बड़ा रहस्य कैसा लगा? क्या मैं भी क़ाबिल नहीं हूँ? यक़ीन मान, इस मामले की वजह से मुझे बड़ी परेशानियाँ झेलनी पड़ी है। सही वक़्त पर अपने कौल व करार को पूरा करना आसान नहीं है। जानती हो बाज़ार में सहनामी सूद नाम की चीज़ होती है। और किस्त की अदायगी। इन दोनों को निपटाना हमेशा बहुत मुश्किल होता है। इसलिए मुझे कभी इधर से तो कभी उधर से बचाना पड़ता है। घर के पैसों को तो इस्तमान नहीं कर सकती थी। थूरवाल्द ने तो ऐश और आराम की ज़िन्दगी जीनी है। बच्चों को भी फ़टे–पुराने कपड़ों में फिरने नहीं दे सकती थी, उनके लिए जो मिलता था, उसे सब उन्हीं पर लगा देती थी। मेरे नन्हें, प्यारे बच्चे!

हेनरिक इब्सन

नाटक– अन्धा युग
लेखक– धर्मवीर भारती

गान्धारी : तो, वह पड़ा है कंकाल मेरे पुत्र का
किया है यह सब कुछ कृष्ण
तुमने किया है यह
सुनो!
आज तुम भी सुनो
मैं तपस्विनी गान्धारी
अपने सारे जीवन के पुण्यों का
अपने सारे पिछले जन्मों के पुण्यों का
बल लेकर कहती हूँ
कृष्ण सुनो !
तुम यदि चाहते तो रुक सकता था युद्ध वह
मैंने प्रसव नहीं किया था कंकाल वह
इंगित पर तुम्हारे ही भीम ने अधर्म किया
क्यों नहीं तुमने वह शाप दिया भीम को
जे तुमने दिया निरपराध अश्वत्थामा को
त्मने किया है प्रभुता का दुरुपयोग
यदि मेरी सेवा में बल है
संचित तप में धर्म है
तो सुनो कृष्ण !
प्रभु हो या परात्पर हो
कुछ भी हो
सारा तुम्हारा वंश
इसी तरह पागल कुत्तों की तरह
तुम खुद उनका विनाश करके कई वर्षों बाद
किसी घने जंगल में
साधारण व्याध के हाथों मारे जाओगे
प्रभु हो
पर मारे जाओगे पशुओं की तरह।

धर्मवीर भारती

कविता
पुरुष / महिला

जलते हुए वन का वसन्त
लेखक– दुष्यंत

गाते–गाते

मैं एक भावुक–सा कवि
इस भीड़ में गाते–गाते चिल्लाने लगा हूँ।

मेरी चेतना जड़ हो गई है–
उस ज़मीन की तरह–
वर्षा में परती रह जाने के कारण–
जिसने उपज नहीं दी
जिसमें हल नहीं लगे।
यह देखते–देखते
कि कितने भयानक भ्रम में जिए हैं बीस वर्ष !
यह सोचते–सोचते
कि मेरा कसूर क्या है
और क्या किया है इन लोगों ने
जो जीवन–भर सभाओं में तालियाँ बजाते रहे,
भूख की शिकायत नहीं की,
बड़ी श्रद्धा से–
थालों में सजे हुए भाषण
और प्रेस की कतरनें खते रहे,
मेरा दिमाग भन्ना गया है !

मैं एक मामूली–सा कवि

इस ग़म में गाते–गाते चिल्लाने लगा हूँ।

नेताओं!

मुझे माफ़ करना

ज़रूर कुछ सुनहले स्वप्न होंगे–

जिन्हें मैंने नहीं देखा।

मैंने तो देखा

जो मशालें उठाकर चले थे

वे तिमिरजयी,

अँधरे की कहानियाँ सुनाने में खो गए।

सहारा टटोलते हुए दोनों दशक

ठोकरें खा–खाकर लँगड़े हो गए।

अपंग और अपाहिज बच्चों की तरह

नंगे बदन

ठंड में काँपता हुआ एक–एक वर्ष

ऐन मेरी पलकों के नीचे से गुज़रा है।

तुम्हारा आभारी हूँ रहनुमाओ !

तुम्हारी बदौलत मेरा देश,

यातनाओं से नहीं,

फूलमालाओं से दबकर मरा है।

मैं एक मामूली–सा कवि

इस खुशी में गाते–गाते चिल्लाने लगा हूँ।

दुष्यंत

कविता
पुरुष/महिला

लहू है कि तब भी गाता है
लेखक– पाश

चिड़ियों का चंबा[1]

चिड़ियों का चंबा उड़कर कहीं न जाएगा
ऐसे ही कहीं इधर–उधर बाँधों से घास खोदेगा
रूखी मिस्सी रोटियाँ ढोएगा
और मैली चुनरियाँ भिगोकर
लुओं से झुलसे चेहरों पर फिराएगा

चिडियों का चंबा उड़कर कहीं नहीं जाएगा
यों ही कहीं इधर–उधर छिपकर अकेला–अकेला रोया करेगा
शापित यौवन के मरसिए गाया करेगा

चिड़ियों के चंबे को जरा भी खबर न होगी
अचानक कहीं लोहे की चोंचों का जाल
उसके जितने आसमान पर बिछ जाएगा
और लंबी उड़ान का उसका सपना
उसके मृगनयनों से भयभीत हो जाएगा

चिड़ियों का चंबा मुफ्त ही परेशान होता है
बाबुल तो डोली भेजकर

उखड़े दरवाजे को ईंटें लगवाएगा

और गुडियाएँ फाड़कर

पसीने से गले हुए कुर्ते पर पैबंद लगवाएगा

चिड़ियों के चंबे को मोह चर्खे का जरा न सताएगा

चिड़ियों का चंबा उड़कर

किसी भी देश न जाएगा

सारी उम्र काँटे चारे के झेलेगा

और सफेद चादर पर लगा

उसकी माहवारी का रक्त उसका मुँह चिढ़ाएगा।

पाश

निम्न नाटकों में से किसी एक नाटक पर साक्षात्कार में बातचीत करने के लिए :–

क्र०सं०	नाटक	नाटककार
01.	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	कालिदास
02.	ध्रुव स्वामिनी	जयशंकर प्रसाद
03.	अंधेर नगरी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
04.	लहरों के राजहंस	मोहन राकेश
05.	ख़ामोश! अदालत जारी है	विजय तेन्दुलकर
06.	कथा एक कंस की	दया प्रकाश सिन्हा
07.	किंग इडिपस	सोफोक्लीज़
08.	रोमियो और जूलियट	विलियम शेक्सपियर
09.	ए डॉल्स हाउस	हेनरिक इब्सन
10.	चैरी का बगीचा	अन्तोन चेख़व